RJPP, Vol. XXI, No.II, Apr.23-Sep.23, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411, Impact Factor 8.858

1857 के स्वातन्त्रय समर के वीर सेनानी

प्रो० सुमन शर्मा
इन्स्टीट्यूट ऑफ टीचर एजूकेशन
कादराबाद, मोदीनगर (गाजियाबाद)
ईमेलः sumansharmaite@gmail.com

सारांश

प्राचीन भारत में जीवन का प्रधान उद्देश्य था आत्मा और परमात्मा का मिलन तथा जीवन में परमात्मा का साक्षात्कार। बौद्ध युग ईसा पूर्व 5वीं सदी में अस्तित्व में आया। इसका समय 1200 ई0 तक माना जाता है। ईसा की छठी शताब्दी विश्व में 'जागृति के युग' के नाम से विख्यात है। इतिहास मात्र विजेताओं तथा राजाओं की यशोगाथाओं का दस्तावेज मात्र अथवा जनश्रुतियों, किदवंतियों एवं अजूबे, किस्से, कहानियों का विवरण मात्र नहीं है। किसी देश का इतिहास उस पर मर–मिटने वाले शहीदों, रणबांकुरों के यशोगान एवं उनके जीवन के प्रेरणादायी प्रसंगों और शौर्यगाथाओं से परिपूर्ण भी होता है। भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत की धरती में जितनी भक्ति और मातृ भावना उस युग में थी, उतनी कभी नहीं रही।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 30.08.2023
Approved: 26.09.2023

प्रो० सुमन शर्मा

1857 के स्वातन्त्रय समर के वीर सेनानी

RJPP Apr.23-Sep.23,
Vol. XXI, No. II,

PP. 241-247
Article No. 33

Online available at:
https://anubooks.com/view?file=3345&session_id=rjpp-september-2023-vol-xxi-no-2

प्रो० सुमन शर्मा

प्रस्तावना

प्राचीन काल में भारतीय जीवन में धर्म का प्रमुख स्थान था। यूं तो उस समय अन्य देशों में भी थोड़ा–बहुत ईश्वर के प्रति अनुराग था, परन्तु प्राचीन भारत में जीवन का प्रधान उद्देश्य था–आत्मा और परमात्मा का मिलन तथा जीवन में परमात्मा का साक्षात्कार। इसीलिए जीवन के क्षेत्रों में धर्म की प्रधानता थी। मानव द्वारा मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का चरम विकास था। वैदिक युग में सामाजिक–आध्यात्मिक जीवन में कर्मकाण्ड की प्रधानता होने के कारण जन जीवन जटिल होने लगा। समाज में शुद्रों की स्थिति निम्न होने लगी। सामाजिक विषमता ने उन्हें समाज से विलग कर दिया था। बौद्ध युग ईसा पूर्व 5वीं सदी में अस्तित्व में आई। इसका समय 1200 ई0 तक माना जाता है। ईसा की छठी शताब्दी विश्व में 'जागृति के युग' (Renaissance period) के नाम से विख्यात है। इस प्रकार महात्मा बुद्ध ने सम–सामयिक परिस्थितियों के अनुकूल सरल, सुबोध बौद्ध धर्म की स्थापना की।

सातवीं शताब्दी में अरब देश में हजरत मोहम्मद ने इस्लाम धर्म की स्थापना की। इस धर्म को मानने व इस पर चले वालों को मुसलमान कहा जाने लगा। 1712 ई0 में सर्वप्रथम मौहम्मद बिन कासिम ने अपने साम्राज्य को बढ़ाने के अभिप्राय से एक बड़ी फौजी शक्ति के साथ भारत पर आक्रमण किया। किन्तु सफल नहीं हो पाया। इसके पश्चात लगभग 300 वर्ष तक किसी भी बाहय् देश का भारत पर आक्रमण नहीं हुआ। 1191ई0 में प्रसिद्ध शासक मुहम्मद गौरी ने राजा जयचन्द से मिलकर भारत पर आक्रमण किया और पृथ्वीराज चौहान को हराकर अपना अधिपत्य स्थापित किया। इसके पश्चात 1206 से 1560 ई0 तक अनेक मुसलमान वंशों का भारत पर शासन स्थापित रहा। मुगल शासक का प्रारम्भ बाबर से हुआ। औरंगजेब इसका अन्तिम बादशाह था। 1857 के पश्चात अंग्रेजों ने भारत पर कब्जा कर लिया और मुस्लिम काल का अन्त हो गया। यहां ये उक्तियां ठीक प्रतीत होती है।

मेरा मजहब इश्क का मजहब
जिसमें कोई तफ़रीक़ नहीं
मेरे हल्के में आते हैं
'तुलसी' भी और 'जामी' भी

(क़ैशर शमीम)

मुस्लिम काल के पश्चात भारत पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। अंग्रेजों ने भारत पर 150 वर्ष राज्य किया। यूं तो अंग्रेज भारत में 1600ई0 से ही व्यापार करने आये थे किन्तु 150 वर्ष बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपना शासन–प्रबन्ध स्थापित किया था। सन् 1600 में भारतवर्ष में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पर्दापण के साथ ब्रिटिश साम्राज्यवाद का अंकुर भारत की जमीन पर उगा और धीरे–धीरे सुदृढ़ होने लगा। 17वीं शताब्दी तक ब्रिटिश राज्य की नींव पर्याप्त रूप से दृढ़ हो चुकी थी।

इतिहास मात्र विजेताओं तथा राजाओं की यशोगाथाओं का दस्तावेज मात्र अथवा जनश्रुतियों किदवंतियों एवं अजूबे किस्से कहानियों का विवरण मात्र नहीं है। किसी देश का इतिहास उस पर मर–मिटने वाले शहीदों, रणबांकुरों के यशोगान एवं उनके जीवन के प्रेरणादायी प्रसंगों और शौर्य गाथाओं से परिपूर्ण भी होता है।

'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा'

(मौहम्मद इकबाल)

ये गीत भी हर किसी की जुबान पर चढ़ा हुआ है, यकीनन इस गीत को सुनकर यही भावना आती है कि हमारा हिन्दुस्तान सारे जहां से अच्छा है। पराधीनता की ग्लानी से देश को मुक्त कराने के लिए सशस्त्र हिंसा व क्रान्ति का जो रास्ता भारतीयों ने अपनाया उसे साम्राज्यवादी शासकों व उनकी विचारधारा के लेखकों ने आंतकवाद का नाम दिया। आज भी कुछ प्रमुख इतिहासकार आतंकवाद शब्द के प्रयोग को सही मानते हैं किन्तु यह शब्द सामान्यतः बुरे अर्थ में प्रयुक्त होता है तथा क्रान्तिकारियों के देश प्रेम, त्याग व बलिदान की भावना का सम्मान करने के स्थान पर उनकी अवमानना व्यक्त करता है अतः जूझारू राष्ट्रवाद की इस धारा को अभिव्यक्ति करने के लिए अब अधिक–से–अधिक

विद्वान राष्ट्रीय क्रान्तिकारी शब्द का प्रयोग करने लगे हैं। क्रान्तिकारियों के वास्तविक कार्य, जिसे आतंकवाद कहा जाता है, आन्दोलन का बाहय् प्रकाश मात्र था। पराधीनता की जलन जब अधिक असहाय हो गयी, तब तब सभी देशों में देशप्रेम का प्रकाश आतंकवाद के रूप में दिख पड़ा। आतंकवाद जन आन्दोलन नहीं, बल्कि निष्फल प्राणों का कूड़ा–करकट गलाकर देश प्रेम की प्रज्जवलित करने का प्रतीक है। यहां पर मुझे एक उक्ति याद आती है।

''सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाजु–ए–कातिल में है''

(रामप्रसाद बिस्मिल)

स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास

1757 में प्लासी के युद्ध के बाद ब्रिटिश भारत में राजनीतिक सत्ता जीत गए और यही वह समय था जब अंग्रेज भारत आये और करीब दो सौ साल तक राज किया। 1848 में लार्ड डल हौजी के कार्यकाल के दौरान यहां उनका शासन स्थापित हुआ। उत्तर–पश्चिम भारत अंग्रेजों के निशाने पर सबसे पहले रहा और 1856 तक उन्होंनें अपना मजबूत अधिकार स्थापित कर लिया। नाराज और असन्तुष्ट स्थानीय शासकों, किसानों और बेरोजगार सैनिकों ने विद्रोह कर दिया जिसे आमतौर पर 1857 का विद्रोह यह '1857 का गदर' के नाम से जाना जाता है। यह गदर मेरठ में बेरोजगार सैनिकों के विद्रोह से शुरू हुआ। उनकी बेरोजगारी का कारण वो नई कारतूस थी जो नई एनफील्ड राइफल में लगती थी। इन कारतूसों का गाय और सूअर की चर्बी से बना ग्रीस था जिसे सैनिक को राइफल इस्तेमाल करने की सूरत में मुंह से हटाना होता था। यह हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही धर्मो से सैनिकों को धार्मिक कारणों से मंजूर नहीं था और उन्होंने इसे इस्तेमाल करने से मना कर दिया था जिसके चलते वे बेरोजगार हो गए। हालांकि यह विद्रोह असफल हुआ और एक साल के अन्दर खत्म हो गया और इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अन्त हुआ और कई नई नीतियों के साथ ब्रिटिश सरकार का उदय हुआ। महारानी विक्टोरिया को भारत का साम्राज्ञी के तौर पर घोषित किया गया। राजाराम मोहन राय, बंकिम चन्द्र और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे सुधारक पटल पर उभरे और उन्होंने भारतीयों के हक की लडाई लड़ी। उनका प्रमुख लक्ष्य एकजुट होकर विदेशी शासन के खिलाफ लड़ना था। भारत की आजादी के लिए 1857 से 1947 के बीच जितने भी प्रयत्न हुए, उनमें स्वतंत्रता का सपना संजोये क्रान्तिकारियों और शहीदों की उपस्थिति सबसे अधिक प्रेरणादायी सिद्ध हुई। वस्तुतः भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत की धरती में जितनी भक्ति और मातृ–भावना उस युग में थी, उतनी कभी नहीं रही। चन्द्रशेखर आजाद के शब्दों में –

''अब भी जिसका खून न खौला,
खून नहीं वह पानी हैं,
देश के काम न आए जो,
बेकार वह जवानी है।''

जिस प्रकार एक विशाल नदी अपने उद्गम स्थान से निकल कर अपने गन्तव्य अर्थात सागर मिलन तक अबाध रूप से बहती जाती है और बीच–बीच में उसमें अन्य छोटी छोटी धाराएं भी मिलती रहती है उसी प्रकार भारत की मुक्ति गंगा का प्रवाह भी सन् 1757 से सन् 1961 तक अजस्त्र है और उनमें मुक्ति यत्न की मुक्ति धाराएं भी मिलती रही हैं।

स्वतन्त्रता संग्राम के महान महानायक

हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों के लिए जीवन परिवार, सम्बन्ध और भावनाओं से भी ज्यादा महत्वपूर्ण था हमारे देश की आजादी और इसके लिए उन्होंने अपनी जान की बाजी भी परवाह भी नहीं की। इस अद्भुत क्रांति में अंसख्य लोग मारे गए, घायल हुए इत्यादि। अपने सम्मान और गरिमा के लिए हर कोई अपने देश के लिए मौत को गले लगाने का फैसला नहीं कर सकता है।

मानव इतिहास में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम एक अनोखी मिसाल है। इसमें सभी वर्गो के लोगों ने सभी प्रकार की जाति, पंथ या धर्म से ऊपर उठकर एक जुट होकर एक उददेश्य के लिए काम किया। यह एक पुर्नजागरण था। यह लोगों की विभिन्न पीढ़ियों का संघर्ष और बलिदान था जिसके परिणाम स्वरूप स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए। भारत की आजादी की लड़ाई में यूं तो लाखों करोडों हिन्दुस्तानियों ने भाग लिया लेकिन कुछ ऐसे भी सपूत थे जो इस आजादी की लडाई के प्रतीक बनकर उभरे। राष्ट्र धर्म की खातिर क्रान्ति की पहली गोली चलाने वाले को भले ही तोपों को उठा दिया गया। लेकिन जो चिंगारी उन्होंने लगायी उस आग में तपकर निकले स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपने अहिंसक आन्दोलन से अंग्रेजों को भारत छोडने पर मजबूर कर दिया। आईये आजादी के इन मतवालों की गाथा बताएँ।

1. **मंगल पाण्डे :** मंगल पांडे का जन्म 30 जनवरी 1827 को बलिया जनपद के उत्तर प्रदेश में हुआ था। ये 10 मई 1848 ई0 को 22 वर्ष की आयु में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेना में भर्ती हुए। बैरक पुर छावनी में बंगाल नेटिव इंफैन्ट्री की 34वीं रेजिमेन्ट में सिपाही रहे। उन्हें एक दिन पता चला कि जो कारतूस भरने के लिए दी जाती है उसके खोल में गाय और सूअर जर्बी लगी है। कारतूस भरने से पहले उसे मुंह से खोलना पड़ता था। यह एक धर्म विरूद्ध काम था। इससे सभी सिपाहियों में घष्णा भर गई। यह बात सारे उत्तर प्रदेश में फैल गई। बैरकपुर छावनी ने भारतीय सैनिकों ने संघर्ष छेड़ दिया। 29 मार्च 1857 ई0 को परेड के मैदान में मंगल पांडे ने खुले रूप में अपने साथियों के समक्ष क्रान्ति का शंख नाद किया। मंगल पांडे पर सैनिक अदालत में मुकदमा चला। 8 अप्रैल 1857ई0 को अंग्रेजों ने पूरी रेजीमेन्ट के सामने मंगल पांडे को फांसी दे दी। उनका नारा था– 'मारो फिरंगी को'।

2. **रानी लक्ष्मीबाई :** रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवम्बर 1835, मदैनी, वाराणसी में हुआ था। रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झांसी राज्य की रानी और 1857 की राज्य क्रांति की द्वितीय शहीद वीरांगना थी। 1857 के सितम्बर तथा अक्टूबर के महीनों में पडौसी राज्य औरछा तथा दतिया के राजाओं ने झांसी पर आक्रमण कर दिया। रानी ने सफलता पूर्वक उसे विफल कर दिया। तांत्या टोपे और रानी की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के किले पर कब्जा कर लिया। 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रितानी सेना से लड़ते लड़ते रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गयी। जनरल हनुरोज ने टिप्पणी की कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिए उल्लेख तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक भी थी।

3. **महात्मा गांधी :** आंखों में गोल कांच का चश्मा, कमर में धोती लपेटे, खुला नंगा बदन, एक हाथ में गीता और दूसरे में लाठी लिए दुबली पतली काया। यह हुलिया है भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक महात्मा गांधी का। भारतीय स्वतन्त्रता के कारण महात्मा गांधी 'राष्ट्रपिता' कहलाए। महात्मा गांधी के सिद्धान्तों को गांधीवाद व उनके राजनीतिक काल को गांधी युग के नाम से जाना जाता है। एक घटना का इनके जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पडा। विलायत से वकालत करने के बाद एक बार इनको दक्षिण अफ्रीका जाना पडा। रेल के प्रथम श्रेणी के टिकट के बावजूद उन्हें पहले दर्जे के कम्पार्टमेंट से धक्के मारकर निकाल दिया गया। उन दिनों दक्षिण अफ्रीका में रंग–भेद का बोलबाला था। इन्होंने प्रण लिया कि मैं रंगभेद के खिलाफ लडूंगा। उन्होंने भारत में फैला छूआ–छूत, सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध लडाई लड़ी। महात्मा गांधी ने साबरमती में आश्रम के लिए नियम बनाए जिसमें सत्य बोलना, अहिंसा का भाव, ब्रहमचर्य व्रत, भोजन संयम, चोरी न करना और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना सभी आश्रमवासियों को समान रूप से मानने पड़ते थे। चरखे की शुरूआत भी गांधी जी ने यहीं से की। 30 जनवरी 1948ई0 को गांधी जी दिल्ली के बिड़ला मन्दिर में प्रार्थना के लिए जा रहे थे, उसी समय नाथूराम गोड़से ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। सोहनलाल द्विवेदी के शब्दों में–

चल पड़े जिधर दो डग, मग में
चल पडे कोटी पग उसी ओर,
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर,

4. <u>शहीद भगत सिंह :</u> उस दिन सुबह 'वीरा' स्कूल के लिए कहकर घर से निकला। सन्ध्या हो गयी लेकिन घर नहीं लौटा। जलियां वाली बाग की घटना हम सभी दुःखी और घबराए हुए थे। काफी देर रात बीते वह गुमसुम सा घर आया। मैंने कहा–''कहाँ गया था वीरा? सब जगह तुझे ढूंढा, चल फल खा ले। वह फफक कर रो उठा। मैंने उसे आमतौर पर कभी रोते नहीं देखा था। उसने अपनी नेकर की जेब से एक शीशी निकाली जिसमें मिट्टी भरी हुई थी। उसने कहा ''मिट्टी नहीं अमरों यह शहीदों का खून है'' उस शीशी से वह रोज खेलता, उसे चूमता और उसमें भरी हुई मिटटी से तिलक लगाता, फिर स्कूल जाता। अमरों का वही वीरा आगे चलकर महान क्रांतिकारी भगत सिंह के नाम से विख्यात हुआ। भगत सिंह का जन्म लायलपुर (जो अब पाकिस्तान में है जिले में 27 सितम्बर 1907 को हुआ था। उस समय सारे देश में अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह की ज्वाला धधक रही थी। इनकी बड़ी बहन का नाम अमरो था। रौलेक्ट एक्ट का पूरे देश में विरोध किया जा रहा था। इसी कानून के विरोध में 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सभा हो रही थी। अचानक अंग्रेज पुलिस आई और चारों ओर से प्रदर्शनकारियों को घेर लिया। पुलिस अधिकारी जनरल डायर ने गोली चलाने का आदेश दे दिया। सैकडों मासूम मारे गए। भगत सिंह के बालपन पर इस घटना का गहरा असर पड़ा फिर उन्होंने बाग की मिटटी लेकर देश के लिए बलिदान होने की शपथ ली।

आरम्भिक शिक्षा पूरी करने के बाद भगत सिंह आगे की शिक्षा के लिए नेशनल कॉलेज लाहौर गए। वहां उनकी मूलाकात सुखदेव और यशपाल से हुई। सन् 1926 में उन्होंने लाहौर में नौजवान सभा का गठन हुआ। इस सभा का उददेश्य था– 'स्वतंत्र भारत की स्थापना'। 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन आने वाला था। भगत सिंह ने कमीशन के बहिश्कार की योजना बनायी। लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में साइमन कमीशन का डट कर विरोध किया गया। ''साइमन वापिस जाओ'' और ''इकलाब जिन्दाबाद'' के नारे लगाए गए। निरीह प्रदर्शनकारियों पर अंग्रेज पुलिस ने बर्बरतापूर्वक लाठी चार्ज किया। लाला लाजपत राय के सिर में चोट लग जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गयी। इस घटना से व्यथित होकर भगत सिंह ने पुलिस कमीशन सांडर्स की हत्या कर दी। अप्रैल 1928 में भगत सिंह और बहुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंका और गिरफ्तारी दी। इन पर मुकदमा चला और जेल में रखा। 7 अक्टूबर 1930 को भगत सिंह और सुखदेव को फांसी की सजा सुनायी गयी। तीनों क्रांतिकारियों को 23 मार्च 1931 को फांसी दे दी गयी। 23 मार्च का दिन शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा –

''जिन्दा रहने की हसरत मेरी भी है, लेकिन मैं कैद रहकर अपना जीवन नहीं बिताना चाहता।''

5. <u>सरफरोसी की तमन्ना :</u> 9 अगस्त 1925 को घटित एक छोटी सी घटना के लिए 18 महीने मुकदमा चला। इस मुकदमें में भारत के नौनिहालों को फांसी जैसी क्रूरतम सजा सुनायी गयी। उन्होंने लापरवाही से सजा सुनी और हंस दिये। वे पूरे जोश से निम्नांकित पंक्तियों को गाते चले दिये–

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए–कातिल में है।

क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए पर्याप्त हथियार खरीदने के लिए धन आवश्यक था। सरकारी खजाना लूटने का निर्णय लिया गया। सहारनपुर से लखनऊ जाने वाली गाडी काकोरी स्टेशन एक डेढ मील बाद ही उन्होंने सरकारी खजाना लूटा। यह घटना 'काकोरी कांड' के नाम से जानी जाती है। यह घटना 1925 को काकोरी नामक स्थान पर घटी। रामप्रसाद बिस्मिल के साथ कुछ आन्दोलन कारियों पर मुकदमा चलाया गया। इस काण्ड में कुल 22 लोगों पर मुकदमा चला। इनमें से कुछ को काला पानी, कठोर कारावास के साथ ही रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक–उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिडी तथा ठाकुर रोशन सिंह को फांसी की सजा हुई। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में 19 दिसम्बर को फांसी हुई। अशफाक उल्ला खां को फैजाबाद जिले में 19 दिसम्बर को फांसी हुई। उन्होंने कहा –

कुछ आरजू नहीं है, आरजू तो बस यह
रख दे कोई जरा सी खाके वतन कफन में।

राजेन्द्र लाहिडी को 17 दिसम्बर 1927 को गोण्डा जेल में फांसी दी गयी। हमारे देश के शहीद भारत के आकाश में देशप्रेम, बलिदान एवं क्रान्ति के ऐसे नक्षत्र है जो सदियों तक हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और नित नव उत्साह का संचार करते रहेंगे–

मरते बिस्मिल, रोशन, लहरी, अशफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकडों इनके रूधिर की धार से।

6. <u>नेताजी सुभाष चन्द्र बोस :</u> गुलाम भारत का आजाद फौजी – बचपन से ही परिवार के सुखमय वातावरण और परिजनों से अलग खोए–खोए रहने वाले सुभष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी सन् 1897 ई0 में उडीसा के कटक नामक स्थान पर हुआ था। महान देशभक्त और कुशल नेता सुभाष चन्द्र बोस अंग्रेजों के लिए खतरनाक व्यक्ति थे। उनकी गतिविधियां ने न सिर्फ अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये बल्कि उन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अपनी एक अलग फौज भी खडी की थी जिसे नाम दिया 'आजाद हिंद फौज'। 21 अक्टूबर, 1943 को 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना की तथा 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया। इस संगठन का प्रतीक चिन्ह एक झंडे पर दहाडते बाघ का चित्र बना होता था।

''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'', ''दिल्ली चलो'' और ''जयहिन्द'' जैसे नारों से सुभाष चन्द्र बोस ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में नई जान फूंकी थी। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का नाम भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी वीरों के बडे सम्मान व श्रद्धा के साथ लिया जाता है। अत्यन्त निडरता से सशस्त्र उपायों द्वारा सुभाष चन्द्र बोस ने जिस प्रकार अंग्रेजों का मुकाबला किया उसके जैसा अन्य उदाहरण नहीं मिलता है, तभी इनका पूरा जीवन आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

7. <u>चन्द्रशेखर आजाद :</u> चन्द्रशेखर आजाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के स्वतंत्र सेनानी थे। वे शहीद राम प्रसाद बिस्मिल व शहीद सिंह सरीखे क्रांतिकारियों के अनन्यतम साथियों में से थे। भावरा या भावरा, जिसे अब चन्द्रशेखर आजाद नगर भी कहा जाता है, भारत के मध्य प्रदेश राज्य के अलीरापुर जिले में स्थित एक नगर है। यहां स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों, शहीद चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में हुआ था। चन्द्रशेखर आजाद 14 वर्ष की आयु में बनारस में एक संस्कृत पाठशाला में पढाई की वहां वे 1920–21 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन से जुडे। वे गिरफ्तार हुए और जज के समक्ष प्रस्तुत किए गए। जहां उन्होंने अपना नाम ''आजाद'' पिता का नाम 'स्वतन्त्रता' और 'जेल' को उनका निवास बताया। उन्हें 15 कोडों की सजा दी गयी। हर कोडे के वार के साथ उन्होंने 'वन्दे मातरम्' और 'महात्मा गांधी की जय' का स्वर बुलन्द किया। इसके बाद वे सार्वजनिक रूप से आजाद कहलाए।

क्रांतिकारी आन्दोलन उग्र हुआ तब आजाद उस तरफ खिंचे और 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट आर्मी से जुडे' राम प्रसाद बिस्मिल के नेतष्त्व में आजाद ने काकोरी शडयंत्र (1925) में सक्रिय भाग लिया और पुलिस की आंखों में धूल झोंककर वे फरार हो गए। 17 दिसम्बर 1925 को चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरू ने शाम के समय लाहौर में पुलिस अधीक्षक के दफ्तर को घेर लिया और ज्यों ही जे0 पी0 सांडर्स अपने अंगरक्षक के साथ मोटर साईकिल पर बैठकर निकले तो राजगुरू ने पहली गोली दाग दी, जो सांडर्स के माथे पर लग गयी और वो मोटर साईकिल से नीचे गिर गया। फिर भगत सिंह ने आगे बढ़कर 4–6 गोलियां दाग कर उसे बिल्कुल ठंडा कर दिया।

8. <u>पंडित जवाहर लाल नेहरू :</u> पं0 जवाहर लाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 इलाहाबाद में हुआ। इनकी मृत्यु 27 मई 1964 को हुई। 1912 में नेहरू जी विदेश से पढाई पूरी करने के बाद भारत में बैरिस्टर

की तरह काम करने लगे। महात्मा गांधी के सम्पर्क में आने के बाद वे आजादी की लड़ाई में कूद पडे और भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष बन गये और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। आजादी की लडाई में वे महात्मा गांधी के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ खडे रहे।

9. **बाल गंगाधर तिलक :** ''स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे''। पहली बार यह नारा बाल गंगाधर तिलक जी ने ही बोला था बाल गंगाधर तिलक को ''भारतीय अशांति के पिता'' कहा जाता था। डेकेन एजूकेशन सोसायटी की इन्होंने स्थापना की थी, जहां भारतीय संस्कुति को पढ़ाया जाता था। बाल गंगाधर तिलक पूरे भारत में घूम–घूम कर लोगों को आजादी की लड़ाई के साथ देने के लिए प्रेरित करते थे।

10. **लाला लाजपत राय :** लाला लाजपत राय जी पंजाब केसरी नाम से प्रेसिद्ध थे। इनका जन्म 28 जनवरी 1865 पंजाब में हुआ था। इनका निधन 17 नवम्बर 1928 में हुआ। लाला लाजपत राय लाल बाल पाल की तिगडी में शामिल थे। 1914 में वे भारत की स्थिति बताने गए थे लेकिन विश्व युद्ध की वजह से वे वहां से लौट ना सके। 1920 में जब वे भारत आए तब जलियां वाला हत्याकांड हुआ था इसके विरूद्ध में इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन छोड़ दिया था, इस आन्दोलन के दौरान अंग्रेजों के लाठी चार्ज से वे बुरी तरह घायल हुए जिसके पश्चात इनकी मृत्यु हो गयी।

अन्त में हम यही कहेंगे इनके जीवन से हम बहुत कुछ सीख कर अपने जीवन में उतार सकते हैं, आज भी भारत को ऐसे ही क्रांतिकारियों की जरूरत हैं, जो देश को भ्रष्टाचार, गरीबी से आजाद कराये। यदि आज हम स्वतंत्र भारत में स्वाश ले रहे है तो इसका श्रेय उन लाखों स्वतन्त्रता सेनानियों को जाता है जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। भारत को आजादी की जंजीरों से मुक्ति दिलाने के लिए इसमें सभी वर्गो के लोगों ने सभी प्रकार की जाति, पंथ या धर्म से ऊपर उठकर एवं एकजुट होकर एक उददेश्य के लिए काम किया। यह लोगों की विभिन्न पीढ़ियों का संघर्श और बलिदान था, जिसके फलस्वरूप आजादी प्राप्त हुई और राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ।

सन्दर्भ

1. सेन, एस0एन0 (1857).
2. मेहता, अशोक. द ग्रेट रिबेलियन।
3. from m.jagranjosh.com.
4. hi.m.wikipedia.org.
5. देसाई, किश्वर, 'जलियावाला बाग, 1919: 'द रियल स्टोरी'।
6. बोस, सुगत, 'महामहिम के प्रतिद्वंद्वी'।
7. सेन, सुरेन्द्र नाथ, अठारह सौ सत्तावन का स्वतंत्रता संग्राम।
8. भटनागर, डा0 ए0बी0, भटनागर डा0 अनुराग. (2016). सम–सामयिक भारत एंव शिक्षा, प्रकाशक विनय रखेजा ब्व आर0लाल बुक डिपो, संस्करण।
9. भटनागर, सुरेश., कुमार, भटनागर संजय. (2002). भारत में शिक्षा का विकास, प्रकाशक सूर्या पब्लिकेशन।
10. मदान, पूनम., कुमार, धर्मेन्द्र. (2017–18). सम–सामयिक भारत और शिक्षा. अग्रवाल पब्लिकेशन।
11. hindi.mapsofindia.com.
12. deepawali.com.in.